8. ऐतिहासिक घटनाएँ

(HISTORICAL EVENTS)

8.1. भारतीय नौसेना का इतिहास

(History of Indian Navy)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने **चोल साम्राज्य की नौसेना की महानता** के संबंध में चर्चा की।

चोल नौसेना के संबंध में:

- **संगम साहित्य** में चोल नौसेना की विभिन्न यात्राओं और समुद्री अभियानों के अनेक संदर्भ मिलते हैं।
- चोल नौसेना को सबसे सशक्त नौसेनाओं में से एक माना जाता था। इसने श्रीलंका और मलय प्रायद्वीप में चोल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- उनके पास जहाज निर्माण संबंधी अति समृद्ध और वृहत ज्ञान था।
- चोलों के कुछ **महत्वपूर्ण बंदरगाह** शहर पुहार/कावेरीपट्टनम (राजधानी), अरिकामेडु, कांचीपुरम, नागापट्टनम आदि थे।
- बड़ी संख्या में महिलाओं ने चोल नौसेना में अग्रणी भूमिका निभाई और सक्रिय रूप से युद्धों में भाग लिया।

चोल साम्राज्य से संबंधित तथ्य:

- **प्रशासन:** प्रशासन की मुख्य विशेषता गांवों में सुस्थापित **स्थानीय स्वशासन** था।
- **महिलाओं की स्थिति:** 'सती' प्रथा शाही परिवारों में प्रचलित थी। उनके शासनकाल के दौरान देवदासी प्रथा का विकास हुआ।
- चोल काल के दौरान तमिल साहित्य का विकास अपने चरम पर पहुँच गया।
- **कला और वास्तुकला की द्रविड़ शैली के उदाहरण:** बृहदेश्वर मंदिर (अब **यूनेस्को** विश्व धरोहर स्थल), नागेश्वर, एरावतेश्वर मंदिर।
- नटराज या नृत्य करते **शिव की कांस्य मूर्ति** चोल काल की महान कलाकृति है।

8.2. पाइका विद्रोह

(Paika Rebellion)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्री ने घोषणा की है कि पाइका विद्रोह का नाम परिवर्तित कर "प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" किया जाएगा।

पाइका विद्रोह का इतिहास

- पाइका विद्रोह 1817 में **ओडिशा** के **खुर्दा** में हुआ था।
- पाइका ओडिशा के गजपति शासकों के कृषक-सैन्य दल (peasants-militias) थे। ये युद्ध के समय राजा को सैन्य सेवाएँ उपलब्ध कराते थे और शांतिकाल में कृषि करते थे।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं ने बंगाल और मद्रास प्रांत में शासन स्थापित करने के बाद 1803 में ओडिशा पर भी अधिकार कर लिया। खुर्दा के राजा का वर्चस्व समाप्त हो गया और पाइका लोगों की शक्ति और प्रतिष्ठा का पतन होने लगा।
- 1817 में कृषक सैन्य दल के वंशानुगत नेता बख्शी जगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में पाइका लोगों ने ब्रिटिश दासता को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह 1825 में बख्शी जगबंधु के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त हुआ।

- कालानुक्रमिक रूप से प्रथम नहीं: 1817 के पाइका विद्रोह से पहले भी 18वीं सदी की शुरुआत में बंगाल में सन्यासी विद्रोह, 1766 में बंगाल एवं बिहार में चुआर विद्रोह, 1805 में त्रावणकोर के दीवान वेल्लू थम्पी का विद्रोह और 1814 में अलीगढ़ के तालुकदारों के विद्रोह हुए थे।

8.3. चंपारण सत्याग्रह

(Champaran Satyagrah)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में चंपारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिल्ली में एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी। जिसका शीर्षक "**स्वच्छाग्रह-बापू को कार्यांजली- एक अभियान, एक प्रदर्शनी**" था।

चंपारण सत्याग्रह के संबंध में:

- 1917 का चंपारण सत्याग्रह महात्मा गाँधी का प्रथम सत्याग्रह था और साथ ही **1918 के खेड़ा सत्याग्रह** ने महात्मा गाँधी को **भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन** के अग्रदूतों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया।
- **राजकुमार शुक्ल** ने चंपारण (बिहार) में नील की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं पर ध्यान देने हेतु गांधी जी को आमंत्रित किया था।
- किसानों को तिनकठिया पद्धति के तहत उनकी भूमि के 3/20 भाग पर अपने भूस्वामियों हेतु नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था।
- नील की निर्धारित कीमत बहुत कम थी तथा इसकी गणना फसल उत्पादन की बजाय कृषि क्षेत्र पर आधारित थी।
- किसानों के समक्ष अनुबंधों से मुक्त होने के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था किन्तु क्षतिपूर्ति का भुगतान बहुत अधिक था।
- गांधीजी के चम्पारण आगमन पर ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें तत्काल जिला छोड़ने का आदेश दिया। गांधीजी ने आदेशों की अवहेलना की तथा विरोध को बनाए रखा।
- उनके सत्याग्रह के परिणामस्वरूप सरकार ने इस मुद्दे पर ध्यान देने हेतु एक समिति का गठन किया तथा गांधीजी को इस समिति का सदस्य बनाया गया।
- गांधीजी अधिकारियों को इस बात हेतु मनाने में सफल हुए कि तिनकठिया प्रणाली को समाप्त किया जाना चाहिए तथा किसानों को क्षतिपूर्ति प्रदान की जानी चाहिए।

8.4. अहमदाबाद में साबरमती आश्रम का उत्सव

(Celebrations of Sabarmati Ashram in Ahmedabad)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- प्रधानमंत्री ने गुजरात में साबरमती आश्रम के शताब्दी समारोह में भाग लिया।

साबरमती आश्रम:

- 1915 में जीवनलाल देसाई द्वारा साबरमती आश्रम को स्थापित किया गया। तत्पश्चात गांधीजी द्वारा 1917 में इसे साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित कर दिया गया।
- इस आश्रम का विचार दक्षिण अफ्रीका के टॉलस्टॉय फार्म तथा फीनिक्स आश्रम से प्रेरित था।
- गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के उपरांत, उनका प्रथम आश्रम 1915 में अहमदाबाद के कोचरब क्षेत्र में स्थापित किया गया था। 1917 में आश्रम को साबरमती नदी के किनारे स्थानांतरित कर दिया गया था।
- साबरमती आश्रम हरिजन आश्रम या सत्याग्रह आश्रम के रूप में भी जाना जाता है।
- गांधीजी ने 1930 में नमक सत्याग्रह के लिए साबरमती आश्रम से दांडी तक अपनी पदयात्रा (पैदल मार्च) प्रारम्भ की। इस समय उन्होंने यह निर्णय लिया कि वह तब तक साबरमती आश्रम नहीं लौटेंगे जब तक भारत को स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो जाती।

- अप्रैल 1936 में गांधीजी ने **शेगाँव** को अपना निवास स्थान बनाया। इसे उन्होंने 'सेवाग्राम' का नाम दिया। सेवाग्राम का अर्थ है 'सेवा का गाँव'।
- **गांधीजी इस सेवाग्राम आश्रम में 1946 तक रहे, जब तक कि** उन्होंने नोआखाली की ओर प्रस्थान नहीं किया।

8.5. बंगाली अख़बारों के प्रकाशन की द्वि-शताब्दी

(Bicentenary of Publication of Bengali Newspaper)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी ने बंगाली अख़बारों के दो सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक संस्करण जारी किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- देश के पहले अख़बार **जेम्स आगस्टस हिक्की** के **'बंगाल गजट'** का प्रकाशन **कोलकता में 1780** में हुआ था। इस अख़बार का प्रकाशन 23 मार्च, 1782 को बंद कर दिया गया था। यह अख़बार केवल दो वर्ष तक ही प्रकाशित हुआ था।
- 19वीं शताब्दी के 80वें दशक तक बंगाल समाचार-पत्रों के प्रकाशन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। 1876 में सर जॉर्ज कैम्पबेल द्वारा किए गए भारतीय भाषा प्रेस के एक सर्वेक्षण में दर्शाया गया कि 38 समाचार-पत्रों की कुल संख्या के आधे समाचार पत्रों का प्रकाशन कलकत्ता से हुआ था।
- ***समाचार दर्पण*** बंगाली भाषा का पहला समाचार-पत्र था। इसका प्रकाशन 23 मई, 1818 को सेरामपुर मिशन प्रेस द्वारा किया गया था।
- 1821 में राममोहन राय के सरंक्षण में ***संवाद कौमुदी*** बंगाली पत्रिका का प्रकाशन हुआ था।
- ***संवाद प्रभाकर*** 1839 में प्रकाशित पहला बंगाली दैनिक अखबार था, जो ईश्वर चंद्र गुप्त द्वारा संरक्षित था।
- प्रारम्भिक बंगाली अख़बारों ने नील बागानों के शोषित श्रमिकों और किसानों के मुद्दों को उठाया। उनमें ***सोम प्रकाश, ग्रामवार्ता प्रकाशिका*** और ***अमृत बाज़ार पत्रिका*** (अंग्रेजी साप्ताहिक बनने से पहले) उल्लेखनीय थे।
- अन्य महत्वपूर्ण समाचार-पत्र हैं बंगाली (एस.एन.बनर्जी), हितबादी (द्विजेन्द्रनाथ टैगोर) तथा संजीबनी (के.के.मित्रा)।

8.6. भारत छोड़ो आंदोलन की 75 वीं वर्षगांठ

(75th Anniversary of Quit India Movemen)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, देश में भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस वर्ष के समारोह का विषय **"संकल्प से सिद्धि"** था। जिसके तहत लोगों से **निर्धनता** और **कुपोषण** से मुक्त होने का संकल्प लेने का आग्रह किया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन

- जुलाई 1942 में कांग्रेस कार्य समिति ने वर्धा में भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया। इसमें यह भी घोषित किया गया कि स्वतंत्र भारत नाजीवाद, फासीवाद और साम्राज्यवाद की आक्रामकता के विरुद्ध होगा।

- **भारत छोड़ो आंदोलन को आरंभ करने के कारण:**
  - ब्रिटिश इच्छाशक्ति की कमी के कारण भारतीय मांगों का समाधान करने में **क्रिप्स मिशन की विफलता**।
  - मूल्य वृद्धि, खाद्य वस्तुओं का अभाव आदि जैसी युद्धकालीन असमानताओं में वृद्धि के कारण **जन सामान्य में असंतोष।**
  - दक्षिण-पूर्व एशिया में अंग्रेजों की पराजय से भी भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने की लोकप्रिय इच्छा को बढ़ावा मिला।
  - दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय शरणार्थियों के साथ अंग्रेजों का भेदभावपूर्ण व्यवहार।
- 8 अगस्त, 1942 के दिन भारत छोड़ो आंदोलन ग्वालिया टैंक, बंबई से आरम्भ किया गया। हालांकि, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, पटेल, आजाद आदि सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था।
- इस आंदोलन के समय विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में व्यापक पैमाने पर जन आवेग एवं शासन के प्रतीकों पर आक्रमण की घटनाएं देखी गईं।
- आंदोलन के दौरान-
  - भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से दिशा–निर्देश प्रदान किए गए।
  - बलिया, तामलुक और सतारा में समानांतर सरकारों की स्थापना।
  - युवाओं, महिलाओं, मजदूरों, किसानों आदि की भागीदारी देखी गई।

8.7. कोरेगाँव की लड़ाई

(Battle of Koregaon)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, कोरेगाँव की लड़ाई की 200वीं वर्षगांठ पर महाराष्ट्र में हिंसक संघर्ष हुआ।

कोरेगाँव की लड़ाई

- यह आंग्ल-मराठा युद्ध की अंतिम लड़ाई थी, जो 1 जनवरी 1818 को भीमा कोरेगाँव में मराठा शासक पेशवा बाजी राव द्वितीय और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों के बीच लड़ी गई थी।
- इस युद्ध में महार समुदाय के सैनिकों द्वारा कंपनी का प्रतिनिधित्व किया गया, जिन्होंने सफलतापूर्वक पेशवा के सैनिकों को रोके रखा। इस युद्ध में पेशवा के लगभग 600 सैनिक मारे गए, जिसके बाद पेशवा ने पुणे पर हमला करने की योजना को त्याग दिया।
- अंग्रेजों ने इस विजय की स्मृति में एक टॉवर का निर्माण करवाया और इस पर एक लेख लिखवाया जिसमें, इस जीत को "पूर्व में ब्रिटिश सेना की गौरवपूर्ण विजयों में से एक" कहा गया है।
- महार इसे ऐसे दिन के रूप में मनाते हैं, जब उन्होंने सैन्य गौरव की अपनी पुरानी स्थिति को वापस प्राप्त कर लिया।

- महार एक जातीय समूह है, जो महाराष्ट्र और इसके आस-पास के राज्यों में निवास करता है।
- यद्यपि महार अस्पृश्य थे परन्तु शताब्दियों से ये अपने सैन्य कौशल के लिए जाने जाते थे। शिवाजी की सेना में इनका एक महत्वपूर्ण स्थान था।
- हालांकि पेशवाओं के समय इनके साथ बुरा व्यवहार किया गया और इन्होंने धीरे-धीरे अपने सैन्य गौरव को खो दिया।
- बी.आर. अम्बेडकर ने महारों को एकजुट किया और उन्हें राजनीतिक चेतना तथा अन्य महत्वपूर्ण शैक्षिक सुधारों के लिए प्रेरित किया।

आँग्ल-मराठा युद्धों से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :

- **प्रथम आँग्ल मराठा युद्ध (1775-1782):** प्रथम आँग्ल-मराठा युद्ध, मराठों द्वारा 1776 की पुरंदर की संधि के उल्लंघन किए जाने से उत्पन्न ब्रिटिश प्रतिशोध के कारण हुआ। इस युद्ध का समापन सालबाई की संधि (1782) के साथ हुआ। इस संधि के परिणामस्वरूप साल्सेट क्षेत्र ब्रिटिशों को प्राप्त हुआ। जबकि पुरंदर की संधि के तहत विजित शेष क्षेत्र मराठों को वापस लौटा दिए गए।
- **द्वितीय आँग्ल-मराठा युद्ध:** मराठों के बीच आंतरिक विवादों ने ब्रिटिशों को एक अन्य अवसर प्रदान किया। बाजीराव द्वितीय ने ब्रिटिशों के साथ बसीन की संधि (1802) पर हस्ताक्षर किए, जिससे ब्रिटिशों को रणनीतिक लाभ प्राप्त हुए। इससे ब्रिटिशों को मराठा क्षेत्र में स्थाई रूप से अंग्रेजी सेना को रखने का अवसर प्राप्त हो गया।
- **तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819):** ब्रिटिशों ने पिंडारियों (मराठा सेना में किराए के सैनिक) के विरुद्ध विभिन्न कार्रवाईयां की। इसने मराठा संघ को ब्रिटिशों के विरुद्ध एकताबद्ध किया। मराठा, ब्रिटिशों द्वारा पराजित हुए तथा विभिन्न संधियों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका परिणाम मराठा संघ के विघटन के रूप में परिलक्षित हुआ।